NJESR/November-2022/Volume-4/Issue-11 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.11.113-119

ब्रह्मांड की उत्पत्तिः भौतिक विज्ञान के सिद्धान्त व गुरु जम्भेश्वर के कथन में समानता

पटेल राम सुथार
सह आचार्य भौतिक
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान–335001
ईमेल–prsuthara@gmail.com

(Received:20October2022/Revised:29October2022/Accepted:15November2022/Published:27November2022)

सार

गुरु जम्भेश्वर का जन्म 1451 में भारत में हुआ था। उन्होंने उस समय लोगों में व्याप्त बुरी आदतों और व्यसनों से छुटकारा पाने के लिए 29 नियम बनाये। गुरु जम्भेश्वर ने 120 सबदों में सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर इसके संचालन और आध्यात्मिक ज्ञान के साथ–साथ सदाचारपूर्ण जीवन जीने की कला के बारे में बताया है। उनके द्वारा वर्णित सूक्तियों (सबदों) में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के रहस्य के बारे में बताया गया है। सबदों की व्याख्याके अनुसार प्रकृति में मौजूद पदार्थों को अलग–अलग चीजों में बदला जा सकता है, इसी प्रक्रिया से दुनिया की उत्पत्ति हुई। गुरु जंभेश्वर के सबदों में ब्रह्मांड की व्याख्या जैसे वर्तमान सृष्टि का जन्म, सृष्टि से पूर्व की स्थिति, एक गूंज जो प्रत्येक पिण्ड में विद्यमान रहती है, वह पिण्ड को आगाह करती रहती है आदि सभी वैज्ञानिक प्रमाणों से सिद्ध हो चुके हैं।

मुख्य शब्द–गुरु जम्भेश्वर, ब्रह्मांड, धंधुकार, बिग बैंग सिद्धांत, बिश्नोई जाति।

परिचय

बहुत सी सामान्य बातें जैसे–ब्रह्मांड के वर्तमान स्वरूप से पूर्वक्या था ? ब्रह्मांड के वर्तमान स्वरूप का प्रारम्भ कैसे हुआ ? ब्रह्मांड का अंत कैसे और कब होगा ? ब्रह्माण्ड के अंत के बाद क्या होगा ? और क्या यही एकमात्र ब्रह्माण्ड है ? इन जिज्ञाषाओं पर वैज्ञानिक आधार पर सार्थक मंथन सन 1990 के बाद से प्रारम्भ हुआ, परन्तु भारतीय पुराणिक ग्रंथों में वर्णित सिद्धांत वर्तमान में प्रचलित वैज्ञानिक सिंद्धान्तों से काभी हद तक मेल खाते है। ब्रह्माण्ड के प्रारंभिक विकास में कुछ प्रमुख घ ाटनाओं की अनुमानित तिथियाँ निम्नानुसार हैं। इनमें से कई तिथियां अनिश्चितता के कारण विवादित हैं, लेकिन सबूतों के आधार पर अधिकांश वैज्ञानिक इस तथ्य पर लगभग एकमत हैं कि आर्किया और बैक्टीरिया लगभग 1.5 से 2 अरब साल पहले यूकेरियोट्स से विकसित हुए थे।

पृथ्वी का निर्माण – 4.5 अरब वर्ष पूर्व

जीवन की उत्पत्ति – 4.0 अरब वर्ष पूर्व

समस्थानिक हस्ताक्षर जीवन का संकेत – 4.0 से 3.5 अरब वर्ष पूर्व

जीवाश्म स्ट्रोमेटोलाइट्स, माइक्रोफॉसिल्स, कार्बन–समृद्ध शेल्स – 3.5 से 3.0 अरब वर्ष पूर्व

ऑक्सीजनिक प्रकाश संश्लेषण – 3.0 से 2.5 अरब वर्ष पूर्व

स्नोबॉल पृथ्वी, महान ऑक्सीकरण घटना – 2.50 से 2.0 अरब वर्ष पूर्व

पहला जीवाश्म यूकेरियोट्स – 2.0 से 1.5 अरब वर्ष पूर्व

स्नोबॉल पृथ्वी, महासागर ऑक्सीजनेशन, कैम्ब्रियन विस्फोट – 1.0 से 0.5 अरब वर्ष पूर्व

डायनासोर, मनुष्य जीवन– 0.5 से 0 अरब वर्ष पूर्व

Source- The Vital Question: Energy, Evolution, and the Origins of Complex Life. By Nick Lane. New York: W. W. Norton & Company, pp-21, ISBN: 978-0-393-08881-6.

गुरु जम्भेश्वर और ब्रह्मांड

गुरु जम्भेश्वर का जन्म 1451 में नागौर जिले के पीपासर गाँव में हुआ था, जो भारत के राजस्थान राज्य के अंतर्गत आता है। उन्होंने उस समय लोगों में व्याप्त बुरी आदतों और व्यसनों से छुटकारा पाने के लिए 29 नियम बनाये। जो लोग इन नियमों का पालन करने लगे वे उनके अनुयायी कहलाये और ये अनुयायी बिश्नोई कहलाये। बिश्नोई समाज की स्थापना पर्यावरण प्रेम और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत पर की गई थी। वर्ष 1730 में बिश्नोई समुदाय के 363 लोगों ने खेजड़ली के पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। गुरु जम्भेश्वर ने 120 सबदों में सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर इसके संचालन और सदाचारपूर्ण जीवन जीने की कला के बारे में बताया है।

गुरु जम्भेश्वर के अनुसार प्रकृति में मौजूद पदार्थों को अलग–अलग चीजों में बदला जा सकता है, इसी प्रक्रिया से दुनिया की उत्पत्ति हुई। गुरु जम्भेश्वर के विभिन्न सबद जिनमें ब्रह्माण्ड के बारे में बताया गया, उनका वर्णन निम्नानुसार है–

सबद–4 ओ३म् जद पवन न होता पाणी न होता। न होता धर गैणारूं।।
चंद न होता सूर न होता। न होता गिगंदर तारूं।।
गऊन गोरू माया जाल न होता न होता हेत पियारूं।।
माय न बाप न बहण न भाई साखन सैंण न होता। न होता पख परवारूं।।
लख चौरासी जीया जूणी न होती। न होती वणीं अठारा भारू।।
सप्त पताल फुणीद न होता। न होता सागर खारूं।।
अजिया सजिया जीया जूणी न होती। न होती कुड़ी भरतारूं।।
अर्थ न गर्थ न गर्व न होता। न होता तेजी तुरंग तुखारूं।।
हाट पटण बाजार न होता। न होता राजदवारूं।।
चाव न चहन न कोह का बाण न होता। तद होता एक निरंजण शंभू, के होता धंधुकारूं।।
बात कदो की पूछै लोई। जुग छत्तीस बिचारूं।।
ताह परैरे अवर छत्तीसूं। पहला अंत न पारूं।।
म्हे तदपण होता अब पण आछै बल–बल होयसां। कह कद कद का करूं विचारूं।।

व्याख्या– सृष्टि सदैव ऐसी नहीं थी जैसी आज दिखाई देती है।जब सृष्टि की उत्पत्ति नहीं हुई थी उस समय सृष्टि के कारण रूप पवन, जल, पृथ्वी, प्रकाश, तेज, सांसारिक, व भौतिक जीवन नहीं थे, जैसा इस समय दिखाईदेता हैं वैसे नहीं थे, अपने कारण रूप में ही थे। जब इस सृष्टि का विस्तार कुछ भी नहीं था।उस समय केवल एक शंभू (ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाला) व एक धंधुकार (वर्तमान ब्रह्मांड के सभी पिण्डों का अकारण रूप)ही थे। गुरु जम्भेश्वरके अनुसार–मैं यह भी बता सकता हूँ कि उस समय क्या स्थिति थी। छतीस युगों से भी आगे की बात बता सकता हूँ तथा उन छतीस युगों से भी पूर्व की बात बता सकता हूँ। उससे पूर्व का तो कोई अन्त पार भी नहीं है। इस समय मैं विद्यमान हूँ और आगे भी रहूँगा।

सबद–59 ओ३म् पढ़ कागल वेदूं शास्त्र सबदूं। भूला भूले झंख्या आलूं।।
अहनिश आव घटंती जावै। तेरा सांस सबी कसवारुं।।
कईया चन्दा कइया सूरुं। कइया काल बजावत तूरुं।।
उर्द्धक चन्दा निरधक सूरुं। सुन घट काल बजावत तूरुं।।
ताछै बहुत भई कसवारूं, रक्तस बिन्दु परहस निन्दू। आप सहै तेपण बूझै नहीं गवारुं।।

व्याख्या–सभी का काल निश्चित है। चाहे सूर्यदेव (बहुत ऊँचा एवं संसार को संतृप्त करने वाला) हो या चन्द्रमा (सूर्य से नीचे संसार को ठण्डक औषधी रस आल्हाद प्रदाता) इनकी भी आयु निश्चित है।सूर्य भी कुछ वर्षों बाद ठण्डा हो जायेगा तथा चन्द्रमा भी काल से ग्रसित हो जायेगा। **चन्द्र और सूर्य के ऊपर भी काल अपनी तुरही बजा करके उन्हें सूचित करता है कि सावधान! अब आयु बहुत ही कम रह गई है।** तो फिर हे मानव! तेरी क्या औकात है। इस छोटी सी आयु को लेकर क्यों झूठे झगड़े

फैलाता है। जरा कभी एकान्त में बैठकर हद्य के भीतर वृत्ति को करके देख। जब तुम्हें असलियत का पता चल जायेगा क्योंकि स्वयं काल ही तेरे अन्दर बैठा हुआ तुरही बजा रहा है। तुम्हें सावधान कर रहा है। यदि समय रहते हुए इस तुरही को नहीं सुना तो बहुत बड़ी हानि हो जायेगी।

सबद–89 ओ३म् उरधक चन्दा निरधक सूरुं। नव लख तारा नेड़ा न दूरुं।।

नव लख चन्दा नव लख सूरुं। नव लख धंधूकारूं।।

तांह परेरै तेपण होता। तिहंका करूं बिचारूं।।

व्याख्या–चन्द्रमा नजदीक है तथा सूर्यदेव चन्द्रमा से काफी दूर है। तारों की संख्यालाखों में है। पृथ्वी से नौ लाख योजन ऊपर तो चन्द्रमा स्थित है तथा उससे भी उतनी दूरी पर सूर्य स्थित है और सूर्य के उपर नौ लाख योजन तक धंधुकार ही है वहॉ पर इन ग्रह नक्षत्रों की पहुॅच नहीं है। तारों की संख्याके साथ–साथ चन्द्रमा, सूर्य व धंधुकारों की संख्या भी लाखों में है। इस बात का प्रमाण वैज्ञानिक आधार पर मिलता है कि विभिन्न ग्रहों के चंद्रमाओं की संख्या भी भिन्न–भिन्न है जैसे बृहस्पति ,शनि आदि ग्रहों के चंद्रमाओं की संख्या एक से अधिक है सूर्य भी एक तारा है ब्रह्मांड में अनेक तारें है इस प्रकार सूर्यों की संख्या भी अनेक हुई। धंधुकार से ऊपर परमात्मा (ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाला) का परम धाम है।

सबद–94 ओ३म् सहंस्र नाम सांई भल शंभु। म्हे उपना आदि मुरारी।।

जद मैं रहयो निरारंभ होकर। उत्पत्ति धंधुकारी।।

ना मेरै मायन ना मेरै बापन। मैं अपनी काया आप संवारी।।

जुग छतीसों शुन्यहि बरत्या। सतजुग माहीं सिरजी सारी।।

ब्रह्मा इन्द्र सकल जग थरप्या। दीन्ही करामात केतीवारी।।

चन्द सूर दोय साक्षी थरप्या। पवन पवनेश्वर पवन अधारी।।

तदम्हे रूप कीयो मैनावतीयो। सत्यव्रत को ज्ञान उचारी।

तदम्हे रूप रच्यो कामठियो। तेतीसों की क्रोड़ हंकारी।।

जब मैं रूप धर्यो वाराही। पृथिवी दाढ़ चढ़ाई सारी।।

नरसिंघ रूप धर हिरण्यकश्यप मार्यो। प्रहलादो रहिया शरण हमारी।।

बावन होय बलिराज चितायो। तीन पैंड कीवी धरसारी।।

परशुराम होय क्षत्रियपन साध्यो। गर्भ न छूटो नारी।।

श्री राम सिर मुकुट बंधायो। सीता के अहंकारी।।

कन्हड़ होयकर बंसी बजाई। गऊ चराई,मरती छेदी, काली नाथ्यो, असुर मार किया क्षयकारी।।

बुद्ध रूप गयासुर मार्यो। काफर मार किया बेगारी।।

पंथ चलायो राह दिखायो। नौ बर विजय हुई हमारी।।

शेष जंभराय आप अपरंपर। अवल दिन से कहियो।।

जांभा गोरख गुरु अपारा, काजी मुल्ला पढ़िया पंडित। निंदा करै गिवारा।।

दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो। तो कहिया करो हमारा।।

इन्द्रपुरी बैकुण्ठे बासो। तो पावो मोक्ष ही द्वारा।।

व्याख्या–गुरु जम्भेश्वरके अनुसार,जब हम मुरारी आदि उपाधि धारी सृष्टि रचना करने की अवस्था में नहीं थे तब जीवों के कर्म शयन कर रहे थे। तब तो वहॉ पर कुछ भी नहीं था, केवल धन्धुकार ही था। सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा आदि कुछ भी नहीं थे। ये पांचों तत्व भी अपने कारण रूप में लय हो चुके थे। ऐसी दशा में केवल धन्धुकार ही शेष था। पूर्व में तो मैं निराकार अवस्था में था प्रलय होने के पश्चात् छतीस युग तो शून्य अवस्था में ही व्यतीत हो गये। कहीं भी कुछ भी जड़ चेतन जीव नजर नहीं आ रहे

थे। इन छतीस युगों के बीत जाने पर सर्व प्रथम नयी सृष्टि का निर्माण सतयुग में प्रारम्भ किया और उस प्रारम्भ के एक ही युग में सृष्टि की पूर्ति कर ली। इस सृष्टि के उत्पत्ति में विशेष रूप से सूर्य, चन्द्रमा को साक्षी बनाकर भेजा। उन्हें सर्व जगत को प्रकाशित करते हुए देखने की सामर्थ्य दी। इस कथन से प्रश्न उत्पन्न है– कि क्या सूर्य, चंद्रमा आदि में निर्णय लेने की क्षमता है ? अर्थात ये निर्णय लेते हैं व उनमें भी बौद्धिक क्षमता है।

सबद–96 ओ३म् सुण गुणवंता सुण बुधवंता। मेरी उत्पत्ति आद लुहारुं।।

भाठी अंदर लोह तपीलो। तंतक सोना घड़ै कसारूं।।

मेरी मनसा अहरण नाद हथोड़ो। शशीयर शूर तपीलो।।

पवन अधारीं खालूं। जे थे गुरु का सबद मानीलो। लंघिबा भव जल पारूं।।

आसण छोड़ सुखासण बैठो। जुग–जुग जीवै जंभ लुहारूं।।

व्याख्या–ईश्वर की उत्पत्ति यानि कार्य–कलाप, रहन–सहन के बारे में इस सबद में बतलायागया है।वईश्वर सृष्टि से भी पूर्व का कार्यकर्त्ता है।

सबद–105 ओ३म् आप अलेख उपन्ना शंभू। निरह निरंजन धंधूकारूं।।

आपै आप हुआ अपरंपर। नै तद चन्दा नै तद सूरुं।।

पवण न पाणी धरती आकाश न थीयों।।

नातद मास न वर्ष न घड़ी न पहरुं। धूप न छाया ताव न सीयों।।

न त्रिलोक न तारामंडल। मेघ न माला वर्षा थीयों।।

न तद जोग नक्षत्र तिथि न बारसीयों। ना तद चवदश पूनो मावसीयों।।

न तद समंद न सागर न गिरि न पर्वत। ना धौलागिरि मेर थीयों।।

ना तद हाट न बाट न कोट न कसबा। बिणज न बाखर लाभ थीयों।।

यह छत धार बड़े सुलतानों। रावण राणा ये दिवाणा हिन्दू मुसलमानुं।।

दोय पंथ नाहीं जुवा जुवा। ना तद काम न कर्षण जोग न दर्शन।।

तीर्थ वासी ये मस वासी। ना तद होता जपिया तपिया। नाखच्चर हीबर बाज थीयों।।

ना तद शूर न वीर न खड़ग न क्षत्री।। रण संग्राम न झूझ न थीयों।।

ना तद सिंह न स्यावज मृग पंखेरूं। हंस न मोरा लै लै सूवो।।

रंग न रसना कापड़ चौपड़। गेहूं चावल भोग थीयों।।

माय न बाप न बहण न भाई। नातद होता पूत धीयों।।

सास न सबदूं जीव न पिंडूं ना तद होता पुरूष त्रियों।।

पाप न पुण्य न सती कुसती। ना तद होती मया न दया।।

आपै आप ऊपनां शम्भू। निरह निरंजन धन्धूकारूं।।

आपो आप हुआ अपरंपर। हे राजेन्द्र लेह विचारूं।।

व्याख्या– जब सृष्टि की प्रलयावस्था थी, केवल शुद्ध ब्रह्म या धंधुकार था। उस समय में ये वर्तमान में दृष्ट ज्योतिर्मय सूर्य, चन्द्रमा आदि पिण्ड नहीं थे। परमात्मा ने अपनी ज्योति का विस्तार नहीं किया था तथा जल, पवन, धरती और आकाश की ही उत्पत्ति नहीं हो सकी थी। ये भी अपने अपने कारण में लीन थे।इन्होंने यह स्थूल रूप धारण नहीं किया था और न ही उस समय काल निर्धारण हो सका था। बिग बैंग थ्योरी के अनुसार ब्रह्मांड में सभी पदार्थ एक बार गर्म और घने आग के गोले के रूप में एक ही बिंदु पर केंद्रित थे। लगभग 20 अरब वर्ष बीतने के बाद एक विशाल विस्फोट के बाद विभिन्न ग्रहों आदि का निर्माण हुआ। यहसिद्धान्तगुरु जम्भेश्वर द्वारा ब्रह्मांड की उत्पत्ति व वर्तमान स्वरूप की व्याख्या के अनुरूप है।

सबद–02 ओ३म् मोरे छाया न माया लोहू न मांसू। रक्तू न धातु।।

मोरे माई न बापू। आपण आपूं।।

रोही न रापूं, कोपूं न कलापूं। दुःख न सरापू।।

लोई अलोई, त्यूंह तृलोई, ऐसा न कोई जपां भी सोई। जिहिं जपे आवागवण न होई।।

मोरी आद न जाणत। महीयल धूँवां बखाणत।।

उर्धढाकले तृसूलूं। आद अनाद तो हम रचिलो, हमें सिरजीलो सैकौण।।

म्हे जोगी के भोगी के अल्प अहारी। ज्ञानी के ध्यानी, के निज कर्मधारी।।

सोषी के पोषी। के जल बिंबधारी, दया धर्म थापले निज बाला ब्रह्मचारी।।

व्याख्या–मेरे शुद्धस्वरूप परमात्मा की आदि कोई नहीं जानता क्योंकि जब वह आदि स्वरूप में स्थित था तब तो सृष्टि की उत्पत्ति भी नहीं थी। तब इस सृष्टि का मानव परमात्मा के प्रथम स्वरूप को कैसे जान सकेगा किन्तु अनुमान के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है जैसे पर्वत पर धुआं निकलता हुआ देखकर अग्नि का अनुमान किया जाता है उसी प्रकार से कार्य रूप जगत को देखकर कारण स्वरूप परमात्मा का अनुमान मात्र ही होता है उसे प्रत्यक्ष कदापि नहीं कर सकते हैं। गुरु जम्भेश्वरके अनुसारब्रह्मांड वर्तमान स्वरूप व इससे पूर्व की स्थिति की रचना तो परमात्मा स्वरूप मैंने ही की है, तब प्रश्न उठता है कि परमात्मा की रचना करने वाला भी तो कोई होगा। यदि यहाँ पर कार्य कारण भाव की कल्पना करते हैं तो अनावस्था दोष आता है इसलिये गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि हमारी सृजना करने वाला तो कोई भी नहीं है। यदि कोई होता है तो उसका भी कर्त्ता और होगा तथा उसका भी कोई और कर्त्ता होगा, इस श्रृंखला का कहीं अंत नहीं होगा, यही अनावस्था दोष है।

ब्रह्मांड की उत्पत्ति व भौतिक विज्ञान के सिद्धान्त

ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में कई सिद्धांत हैं, जिनमें से केवल तीन सिद्धांत अधिक प्रचलित हैं– स्थिर अवस्था सिद्धांत, बिग बैंग सिद्धांत और स्पंदन सिद्धांत।

स्थिर अवस्था सिद्धांत में, वे खगोलीय पिंड जो देखने योग्य ब्रह्मांड की सीमाओं को पार कर गए हैं अर्थात् जो दृश्य ब्रह्मांड की सीमाओं से परे चले गए हैं, और उन खाली स्थानों को भरने के लिए नई आकाशगंगाएँ लगातार बन रही हैं।

स्पंदन सिद्धांत मानता है कि ब्रह्मांड लगातार विस्तार और संकुचन कर रहा है। इस सिद्धांत के अनुसार कुछ समय बाद ब्रह्मांड का विस्तार रुक सकता है। फिर उसके बाद संकुचन की संभावना हो सकती है. फिर, जब यह संकुचन एक निश्चित आकार तक पहुंच जाएगा तो एक विस्फोट होगा। इस विस्फोट के परिणामस्वरूप ब्रह्मांड का विस्तार फिर से शुरू हो जाएगा। इसलिए, ब्रह्मांड बारी–बारी से सिकुड़ता और फैलता है, जिसके परिणामस्वरूप एक स्पंदित ब्रह्मांड बनता है।

बिग बैंग थ्योरी में कहा गया है कि ब्रह्मांड में सभी पदार्थ एक बार गर्म और घने आग के गोले के रूप में एक ही बिंदु पर केंद्रित थे, जिसका तापमान लगभग 10^{12} केल्विन था। लगभग 20 अरब वर्ष बीतने के बाद एक विशाल विस्फोट के बाद वह सारा पदार्थ जो एक जगह एकत्रित था तीव्र गति से अंतरिक्ष में बिखर गया। यह फैलाव सभी दिशाओं में हुआ और इस फैलाव के परिणामस्वरूप, बिखरे हुए पदार्थ ने अंततः आकाशगंगाओं और तारों का निर्माण किया।

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित सिद्धांतों में बिग बैंग सिद्धांत अधिक व्यापक रूप से स्वीकृत है।

बिग बैंग सिद्धांत की परिकल्पना 100 साल पहले की गई थी। बिग बैंक शब्द सबसे पहले फ्रेड हॉयल द्वारा गढ़ा गया था। फ्रेड हॉयल यूनाइटेड किंगडम के एक प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे। उनकी परिकल्पना के अनुसार ब्रह्माण्ड एक निश्चित अपरिवर्तनीय है। 1949 में, फ्रेड हॉयल ने स्थिर और विस्तारित ब्रह्मांड के बीच अंतर समझाया। 1990 के दशक तक, ब्रह्मांड के लिए दो परिकल्पनाएँ थीं – एक जिसके अनुसार गुरुत्वाकर्षण ब्रह्मांड के विस्तार को धीमा कर देता है, और अंततः इसे उल्टा कर देगा, जिससे एक बड़ा संकट पैदा होगा। जबकि दूसरी परिकल्पना के अनुसार ब्रह्माण्ड का सदैव विस्तार होता रहेगा। जब खगोलविदों के पास ब्रह्मांड के विस्तार को मापने की तकनीक थी, तो अवलोकन से पता चला कि ब्रह्मांड का विस्तार तीव्र गति से हो रहा

है। तीव्र विस्तार के दो परिणाम हो सकते हैं और दोनों ही परिणाम गंभीर होंगे। दो परिणामों में से एक यह है कि ब्रह्मांड के विस्तार के परिणामस्वरूप यह एक बड़े फ्रिज में समाप्त हो जाएगा जहां अन्य आकाशगंगाओं से प्रकाश हम तक नहीं पहुंच पाएगा। दूसरे परिणाम के तहत, हमें एक बड़ी दरार का अनुभव होता है और हिंसक त्वरण से सारा मामला छिन्न–भिन्न हो जाता है और कुछ भी प्रकट नहीं होता है। ब्रह्मांड की उत्पत्ति के लिए बिग बैंग सिद्धांत को वैज्ञानिकों द्वारा 50 वर्षों से अधिक समय से स्वीकार किया गया है। ब्रह्मांड अनगिनत रहस्यों से भरा हुआ है। ये रहस्य ब्रह्माण्ड के लिए वर्तमान में प्रचलित सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड का 95 प्रतिशत हिस्सा अदृश्य है, इसके दो घटक हैं, एक डार्क एनर्जी और दूसरा डार्क मैटर। दोनों में से डार्क एनर्जी अधिक रहस्यमय है। यह एक अज्ञात घटना है, जिसके कारण ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है, जिससे ब्रह्मांड तेज गति से गुब्बारा बन रहा है, जबकि दूसरे रहस्य, डार्क मैटर का प्रभाव पहले के विपरीत माना जाता है। ब्रह्माण्ड के विभिन्न घटक इसी प्रभाव से एक साथ बंधे हुए हैं। डार्क मैटर का साक्ष्य 1970 के दशक में खगोलशास्त्री रूबी द्वारा प्रस्तुत किया गया था। सर्पिल आकाशगंगाओं के अवलोकन में उन्होंने पाया कि आकाशगंगाओं का 90 प्रतिशत हिस्सा अदृश्य और अज्ञात है, बाद के अध्ययनों में यह साबित हुआ कि डार्क मैटर और कुछ नहीं बल्कि डार्क मैटर वह है जो पूरे ब्रह्मांड में एक ब्रह्मांडीय तरंग पैदा करता है। यह ब्रह्मांडीय जाल आकाशगंगाओं को बनाने में मदद करता है और उन्हें अलग होने से भी रोकता है।

डार्क एनर्जी और डार्क मैटर के बारे में जब सिद्धांत और बेहतर होंगे, तो हम बिग बैंग से ब्रह्मांड के निर्माण के दौरान क्या हुआ, इसको बेहतर समझ प्राप्त कर सकते हैं।

यह तथ्य कि डार्क एनर्जी और डार्क मैटर दोनों अदृश्य हैं, यह बताता है कि ब्रह्मांड जितना होना चाहिए उससे अधिक हल्का क्यों प्रतीत होता है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड का लगभग 68 प्रतिशत भाग डार्क एनर्जी है और 27 प्रतिशत डार्क मैटर है। लेकिन एक बार जब हमारे पास डार्क एनर्जी और डार्क मैटर के बारे में जब सिद्धांत और बेहतर होंगे, तो हम बिग बैंग से ब्रह्मांड के निर्माण के दौरान क्या हुआ, इसकी बेहतर समझ प्राप्त कर सकते हैं।

भौतिक विज्ञानी बिग बैंग सिद्धांत में बड़े अंतरालों को भरकर ब्रह्मांड के रहस्यों को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं।

अर्नो पेनजियास और रॉबर्ट विल्सन ने न्यू जर्सी, अमेरिका में एक अति–संवेदनशील रेडियो एंटीना पर काम किया। उनके काम का मुख्य उद्देश्य आकाशगंगा के चारों ओर हाइड्रोजन के प्रभामंडल का पता लगाना था। दिन हो या रात, जहां भी उन्होंने एंटीना की ओर इशारा किया, शोधकर्ताओं ने पाया कि वहां हमेशा एक हल्की सी गड़गड़ाहट होती रहती थी। उन्होंने गुनगुनाहट को रोकने की कोशिश की, लेकिन यह हमेशा बनी रही। आख़िरकार, भौतिक विज्ञानी रॉबर्ट डिके ने गुंजन के बारे में पता लगाया और इसकी व्याख्या बड़े धमाके की फुसफुसाहट के रूप में की। ऐसी ही व्याख्या गुरु जम्भेश्वर ने सबद 59 में की है–चन्द्र और सूर्य के ऊपर भी काल अपनी तुरही बजा करके उन्हें सूचित करता है कि सावधान! अब आयु बहुत ही कम रह गई है।

ब्रह्मांड के जन्म से बची हुई ऊर्जा ब्रह्मांडीय माइक्रोवेव पृष्ठभूमि है जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। बिग बैंग के 380,000 साल बाद भी एक धुंधला अवशेष अभी भी चमक रहा है, इसका सबसे दूर का हिस्सा हम प्रकाश के साथ देख सकते हैं। वैज्ञानिकों ने विभिन्न जांचों का उपयोग करके दशकों तक इस बचे हुए विकिरण का अध्ययन किया है। प्लैंक अंतरिक्ष यान ने 2009–13 में आकाश में अपने तापमान में छोटे बदलावों की तलाश की। ये तापमान में उतार–चढ़ाव उन बीजों के संकेत हैं जिनसे आज की आकाशगंगाएँ और तारे विकसित हुए। महा प्रलयावस्था में जब सृष्टि के कारण रूप आकाशादि तत्व ही नहीं रहते, वे अपने कारण में विलीन हो जाते है तथा पुनः सृष्टि प्रारम्भ अवस्था में अपने कारण से कार्य रूप परिणित हो जाते हैं, यही क्रम चलता रहता है।

निष्कर्ष–

गुरु जंभेश्वर के सबदों में ब्रह्मांड की व्याख्या जैसे वर्तमान सृष्टि का जन्म, सृष्टि से पूर्व की स्थिति, एक गूंज जो प्रत्येक बिंदु को आगाह करती है आदि सभी वैज्ञानिक प्रमाणों से सिद्ध हो चुके हैं। जबकि गुरु जंभेश्वर का काल 1451–1508 इसवी है इस प्रकार ब्रह्मांड के समस्त ज्ञान का प्रारंभिक स्पष्ट व सरल स्रोत गुरु जंभेश्वर के सबद हैं।

सन्दर्भ–

1. स्वामी ज्ञानप्रकाश (1973), जम्भसागर, ए.वी. प्रिंटर्स ऋषिकेश, उत्तराखंड, भारत।
2. स्वामी सदानंद (2001), शब्दवाणी, बिश्नोई प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर, राजस्थान, भारत।
3. Kate Howells (2021)- Space Is Cool as F_ck-Andrews, McMeel Publishing Publisher: Andrews McMeel Publishing (February 16, 2021), pp-8-26, ISBN13: 9781524862978.
4. Hawking, Stephen W. (2020). A Brief History of Time From The Big Bang to Black Holes, Bantam, pp-61-71, ISBN-055305340X, 9780553053401
5. Website: https://www.space.com/25126-big-bang-theory.html
6. Website: https://www.thebigger.com/physics/universe/explain-the-various-theories-of-the-origin-of-universe/